एम.ए. द्वितीयसत्रार्द्धम् (सत्रम् 2022-23)

पाठ्यक्रमः

विषयः – हिन्दू अध्ययन

पत्रसंख्या	गूढाङ्कः	शीर्षकम्	विषयः	श्रेयाङ्कः
प्रथमपत्रम्	2008.1	सांस्कृतिक पर्यटन	हिन्दू अध्ययनम्	4
द्वितीयपत्रम्	2008.2	विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि	हिन्दू अध्ययनम्	4
तृतीयपत्रम्	2008.3	धर्म एवं कर्म विमर्श	हिन्दू अध्ययनम्	4
चतुर्थपत्रम्	2008.4.क	वैदिक परम्परा के सिद्धान्त	हिन्दू अध्ययनम्	4
	2008.4.ख	जैन परम्परा के सिद्धान्त		
	2008.4.ग	बौद्ध परम्परा के सिद्धान्त		
पञ्चमपत्रम्	2008.5.क	वेदांग	हिन्दू अध्ययनम्	4
	2008.5.ख	पालि भाषा एवं साहित्य		
	2008.5.ग	प्राकृत भाषा एवं साहित्य		

कक्षा - एम.ए.

विषय:- हिन्दू अध्ययन

सांस्कृतिक पर्यटन

सत्रार्द्धम् : द्वितीयम्

पत्रम् : प्रथमम्

विषय गूढाङ्क:	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्क:	एककम्	पाठ्यग्रन्थ – सांस्कृतिक पर्यटन	पूर्णाङ्का:	अवधि:	श्रेयोऽङ्क:
2008.1	प्रथमम्		**पाठ्यांश:**	१००	९० होरा:	४
		१	**पर्यटन का अर्थ-** परिभाषा, पर्यटन के उद्देश्य एवं महत्त्व, पर्यटन के प्रमुख सिद्धान्त, सांस्कृतिक एकात्मता में पर्यटन का योगदान	२०	२२	१
		२	**पर्यटन का सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्व-** पर्यटन का आर्थिक महत्व, राष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्व,सामाजिक महत्त्व, ऐतिहासिक महत्त्व, रोजगार की दृष्टि से महत्त्व	२०	२३	१
		३	**भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल-** द्वादश ज्योतिर्लिंग, चारधाम, सप्तपुरी, प्रमुख तीर्थ, कुरुक्षेत्र, प्रमुख शक्तिपीठ, कोणार्क का सूर्यमंदिर, सांस्कृतिक मेला-कुंभ, ऐतिहासिक महत्त्व के स्थल- अजन्ता, एलोरा, प्रमुख स्मारक	२०	२२	१
		४	**हरियाणा राज्य के पर्यटन स्थल-** 48 कोस-कुरुक्षेत्र, कपिष्ठल का सांस्कृतिक महत्त्व, अगरोहा पुरास्थल- बौद्ध स्तूप,हरियाणा के प्रमुख महोत्सव- मेला श्री कपाल मोचन, सूरजकुण्ड मेला, सूर्यग्रहण मेला, गीता जयन्ती महोत्सव, ऐतिहासिक स्थल- राखीगढ़ी, आदिबद्री, स्थानेश्वर, हरियाणा के स्मारक	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्का: ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्का: ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्का: ०५ ४.उपस्थितिः अङ्का: ०५ ७५%= ०१ अङ्क: ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्का: ८६%-९०%= ०४ अङ्का: ९१% त: अधिकम्= ०५ अङ्का:	२०	-	-

सहायक पुस्तकानि -

1. पर्यटन सिद्धान्त और व्यवहार — सी कपूर
2. सांस्कृतिक खण्ड — दामोदर वशिष्ठ
3. हरियाणा की लोक मन्जूषा — डॉ. पूर्ण चन्द शर्मा
4. हरियाणा का इतिहास और संस्कृति — डॉ. के.सी.यादव
5. संस्कृत साहित्य में कुरुक्षेत्र
6. कुरुक्षेत्र के तीर्थ
7. वैदिक साहित्य और संस्कृति
8. महाभारत
9. वामनपुराण
10. हरियाणा का सांस्कृतिक अध्ययन

कक्षा - एम.ए.

विषयः- हिन्दू अध्ययन

विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि

सत्रम् : द्वितीय

पत्रम् : द्वितीयम्

विषयः कूटाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः-	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोऽङ्कः
			पाठ्यांशः	१००	९० होराः	४
2008.2	द्वितीयम्	१	स्वतंत्रान्वेषण की सीमा हेतु पारम्परिक पाश्चात्य प्रतिबन्ध, पारम्परिक प्रविधियाँ (ऐतिहासिक जीवनियाँ इत्यादि), **रीतिवाद एवं नव-समीक्षावाद** : रीति एवं काव्यात्मकता के महत्व, न कि लेखक का, **मार्क्सवाद एवं समीक्षावादी चिन्तन**विश्लेषणात्मक उपागमों के रूप में वर्ग एवं आर्थिक-सिद्धान्तों की भूमिका समीक्षावादी सिद्धान्त-एक सोद्देश्यात्मक सिद्धान्त : इसके इतिहास का पुनरावलोकन एवं यूरोप में उन्नत वामपंथी चिन्तन के अभिप्राय	२०	२२	१
		२	**संरचनावाद-** सोस्युर, क्लाउड लेवी स्ट्रास संस्कृत भाषा-विज्ञान का प्रभाव, परिणामात्मक भिन्नताएँ (शब्दों के अन्तर्निहितार्थ नहीं होते), वस्तुनिष्ठता पर बल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, **उत्तर-संरचनावाद-** औपनिषदिक सापेक्षवाद के प्रभाव, विखण्डन-सन्दर्भ हानि एवं अर्थ का अन्तहीन स्थगनादिक, समीक्षक का अर्थ रचना स्वातन्त्र्य,	२०	२३	१
		३	**ऐतिहासकतावाद, नव ऐतिहासिकतावाद सांस्कृतिक भौतिकवाद -** ऐतिहासिक मूल्यपरक निर्णयों के निर्माण की आवश्यकता, महान एवं लोकप्रिय साहित्यों के बीच अभेद : शक्ति-प्रयोग एवं अवसान, गैर-मानक। व्यवहारों में प्रबल अभिरूचिः कृषक विद्रोह, परवस्त्राधारण, **प्राच्यवाद, आधुनिकतावाद, औपनिवेशिक आलोचना और लैंगिक अध्ययन** ।	२०	२२	१
		४	विज्ञान के क्षेत्र में पाश्चात्य एवं भारतीय दृष्टिः मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विज्ञान एवं संज्ञान के क्षेत्र में देकार्त्तीय दृष्टि, अपचयन के परे जाना : भारतीय ज्ञान-तंत्र की भूमिका, भारतीय प्रविधियों का उपयोग कर समकालीन पाठों का विश्लेषण	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्काः ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्काः ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्काः ०५ ४.उपस्थितिः अङ्काः ०५ ७५%= ०१ अङ्कः ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्काः ८६%-९०%= ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम्= ०५ अङ्काः	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. मार्क्सवाद और रामराज्य. हरिहरानन्दसरस्वती धर्मसम्राट् करपात्री स्वामी, गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. Colonial Discourse and Post-Colonial Theory: A Reader, Williams, Patrick and Laura Chrismam, Columbia press, NY, 1993.
3. History and Historians in the 19th century, GP Gooch, Forgotten Books, London, 2018.
4. Gender and Politics of History, Joan Scott, Oxford University Press, 1989.
5. G-Research Methodology and Historical investigation, Clark kitson, Cambridge University Presss, 1972.
6. The Age of Revoloution, 1989-1848, Eric Hobsbawn, Weidenfild and Nicolson, World Publishing Company, London, 1962.
7. Marxism and the Methodologies of History, Gregor Mclennan, Verso Books, London, 1981.
8. Postmodernism: A very short Introduction, Christopher Butler, Oxford-illustrated edition, Oxford University, London, 2008
9. समाज भाषा विज्ञान-शिवाजी विद्यापीठ, कोलापुर

कक्षा - एम.ए.

विषयः- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीय　　धर्म एवं कर्म विमर्श　　पत्रम् : तृतीयम्

वि.कू	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः-	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोङ्कः
2008.3	तृतीयम्		पाठ्यांशः	१००	९० होराः	४
		१	**धर्म-परिभाषाओं का सर्वेक्षण** (श्रुति, स्मृति, कल्प, धर्मशास्त्र तथा सम्पूर्ण परम्परा में);उत्तदायित्व तथा सेवा-भाव में सम्बन्ध, प्रवृत्ति तथा निवृत्तिमूलक धर्म, अभ्युदय एवं निःश्रेयस् (पुरूषार्थ) की सिद्धि हेतु।	२०	२२	१
		२	**वैदिक, जैन, बौद्ध एवं सिक्ख परम्परा में सभी स्तरों पर धर्म एक संगठनात्मक सिद्धान्तः**व्यक्तिगत (आश्रम धर्म) और वर्णाश्रम धर्म को चुनने की स्वतंत्रता, समाज और समुदाय : आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त एवं संबंधित विधिशास्त्र, राज्य तथा राजा का दायित्व : राजधर्म, ब्राह्माण्ड और ऋत की अवधारणा।	२०	२३	१
		३	**विश्वास और उपासना पर धर्म की प्रधानताः** सच्चे वैष्णव (वैष्णव जन तो....), शैव, सिक्ख (देहु शिवा वर मोहे एसो...), बौद्ध (अष्टांगिक मार्ग) की परिभाषाएँ,धर्म का आविर्भावात्मक स्वरूप, साक्षात्कार की शृंखलाओं पर आधारित : धर्म जडात्मक इकाई नहीं, धर्म, रिलीजन, पन्थ, मज़हब एवं सम्प्रदाय पदों की व्याख्या	२०	२२	१
		४	**कर्म : परिभाषाओं का सर्वेक्षणः** कर्म, विकर्म एवं अकर्म (भगवद्गीता), छः श्रेणियाँ : काम्य, नित्य, निषिद्धि, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त एवं उपासना, व्यक्ति के लिए सकाम धर्म का प्रावधान, निष्काम कर्म : ब्रह्म या सर्वम एक वास्तविक कर्ता के रूप में, विनयशीलता तथा कर्त्तव्यकर्म दायित्व मात्र के निर्वहण लिए, कर्म का संकल्पस्वातन्त्रय, लेकिन कर्मफल पर पूर्णनियन्त्रण का अभाव, कर्मफल की अपरिहार्यता, कर्म और संस्कार (भागवतपुराण में राजा भरत के मृग बनने की कथा।	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्काः ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्काः ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्काः ०५ ४.उपस्थितिः अङ्काः ०५ ७५%= ०१ अङ्कः ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्काः ८६%-९०%= ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम्= ०५ अङ्काः	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, भाग-5, सन् 2019, सप्तम् संस्करण।
2. हिन्दूधर्म जीवन में सनातन की खोज, विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2013।
3. उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, रामचन्द्र दत्तत्रेय रानाडे. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1971।
4. जैन दर्शन मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, जैनविश्वभारती, लाडनूँ (राजस्थान), आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चुरू, राजस्थान, 2014।
5. भगवद्गीता, शांकरभाष्य (हिन्दी अनुवाद सहित). गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2065।
6. सनातनधर्मोद्धारः (भाषा-भाव-प्रभाटीकासमेतः) (खण्ड 1 से 4), उमापति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत 1999।
7. Dharma, the categorial Imperative, edited by: Ashok Vohra, Arvind Sharma, Mrinal Miri, D.K. Printworld, New Delhi, 2005.
8. The Hindu vision, Anantanand Rambachan, Motilal Banaridaas, Delhi, 1999.
9. भारतीय सनातन संस्कृति, डॉ. हर्षनाथ मिश्र।

कक्षा - एम.ए.

विषय:- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीय　　　　वैदिक परम्परा के सिद्धान्त (क)　　　　पत्रम् : चतुर्थम् (क)

वि. क	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्क:	एककम्	पाठ्यग्रन्थ:-	पूर्णाङ्का:	अवधि:	श्रेयोऽङ्क:
			पाठ्यांश:	१००	९०	४
2008.4.1	चतुर्थम्	१	**वैदिक परम्परा एवं उसके आधारभूत तत्त्व:** वेद : अर्थ एवं व्युत्पत्ति, पर्याय, विभिन्न परम्पराएँ,वेद, वेदत्रयी, समाम्नाय, निगम, स्वाध्याय आदि का एकत्व, ऋषि, देवता एवं छन्द का स्वरूप, वैदिक संहिताओ एवं शाखाओं का उद्भव एवं विकास, वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषदों का एकशरीरत्व अथवा एकात्मता, निगमागम का अन्तःसम्बन्ध	२०	२२	१
		२	**यज्ञ एवं इष्टियां:** काम्य एवं निष्काम यज्ञ, यज्ञ की पात्रता एवं प्रारम्भिक विधान अग्निहोत्र, सन्ध्योपासन एवं वृत्ति-निरोध, अग्निशाला, पंचाग्नि विवरण एवं यागशाला का विज्ञान,ऋत, सत्य, दीक्षा, तप एवं यज्ञ के प्रत्यय, शुभ एवं अशुभ की अवधारणाएँ (पाप-पुण्य, ऋत-अनृत, स्वर्ग-नरक आदि) विनियोग का स्वरूप-ऋषि, देवता, छन्द एवं उनका विनियोग।	२०	२३	१
		३	**यज्ञमीमांसा:** मीमांसाशास्त्र का संक्षिप्त परिचय, वैदिक यज्ञों का परिणाम (अपूर्व आदि) देवतत्व की अवधारणा।	२०	२२	१
		४	**वेद की सार्वजनीन एवं सार्वभौमिक उपादेयता** -व्यक्तित्व निर्माण के सन्दर्भ में, स्वस्थ समाज के निर्माण के सन्दर्भ में, राष्ट्र निर्माण के सन्दर्भ में। **वेद व्याख्या की प्रमुख परम्परायें** - वैदिक निर्वचन- याज्ञिक तथा आध्यात्मिक, वैदिक पर्यावरण विज्ञान।	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् 　अङ्का: ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या 　अङ्का: ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्या: चयनं प्रबन्धनञ्च 　अङ्का: ०५ ४.उपस्थिति: 　अङ्का: ०५ ७५%= ०१ अङ्क: ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्का: ८६%-९०%= ०४ अङ्का: ९१% त: अधिकम्= ०५ अङ्का:	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. वैदिक संहितायें-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
3. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर।
4. मीमांसा कोश, केवलानन्द सरस्वती, 1952।
5. वैदिक देवताओं का उद्भव एवं विकास, गया चरण त्रिपाठी, नई दिल्ली, 2014।
6. वैदिक देवता दर्शन, प्रभु दयाल अग्निहोत्री, नई दिल्ली, 1989।
7. वेदरश्मि, वासुदेव शरण अग्रवाल, वाराणसी, 1964।
8. धर्मशास्त्र का इतिहास (प्रथम भाग), पी. वी. काणे, पूना।
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास (भाग प्रथम-द्वितीय), संपादक, ब्रजबिहारी चौबे एवं ओमप्रकाश पाण्डेय, लखनऊ, 1996।
10. वेद रहस्य, श्री अरविन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी, 2015।
11. वैदिक संस्कृति के मूलतत्त्व, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार।
12. वेद-विमर्श, भगवद्दत्त।
13. वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रिया एवं व्याख्या की विभिन्न धाराएँ , एकनाथ वेदालंकार।
14. वेदव्याख्या की दिशाएँ, डॉ. चौबे
15. Vedic studies Vol. I, A.Venkat Subiah, Mysure, 1932.
16. Vedic Religion, K.Chattopadhyaya, Dept. of Philosophy and Religion, BHU, Varanasi.

कक्षा - एम.ए.

विषय:- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीयम् जैन परम्परा के सिद्धान्त (ख) पत्रम् : चतुर्थम् (ख)

वि.कू	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्क:	एककम्	पाठ्यग्रन्थ:-	पूर्णाङ्का:	अवधि:	श्रेयोऽङ्क:
2008.4.2	चतुर्थम्		पाठ्यांश:	१००	९०	४
		१	**जैन तीर्थकरों का इतिहास** -तीर्थकर परम्परा, ऋषभदेव, पार्श्वनाथ, महावीर	२०	२२	१
		२	**जैन तत्त्वमीमांस** - नवतत्त्व तथा उनके स्वरूप, जीव, अजीव-ईश्वरतत्त्व (पञ्चपरमेष्ठि), सम्यग्दर्शन	२०	२३	१
		३	**जैन ज्ञानमीमांसा** - सम्यक् ज्ञान, प्रमाण ज्ञान, परोक्ष प्रमाण (मति एवं श्रुतज्ञान), प्रत्यक्ष प्रमाण	२०	२२	१
		४	**केवल ज्ञान (सर्वज्ञता)प्रमुख सिद्धान्त** -आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, नयवाद, अहिंसा **जैन आचार मीमांसा** -जैनश्रावकाचार, जैनश्रमणाचार	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्का: ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्का: ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्का: ०५ ४.उपस्थितिः अङ्का: ०५ ७५%= ०१ अङ्क: ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्का: ८६%-९०%= ०४ अङ्का: ९१% त: अधिकम्= ०५ अङ्का:	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. जैन दर्शन मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ (राजस्थान, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चुरू राजस्थान।
2. जैन दर्शन,महेन्द्र कुमार जैन, न्यायचार्य, श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी 2210005.
3. जैन धर्म, कैलाशचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री (प्राच्य श्रमण भारती), मुजफ्फपुर, 1998.
4. जैन तत्वमीमांसा, फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, अशोक प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 1960।
5. चार तीर्थसूत्र, सुखलाल संघवीस श्री जैन संस्कृति संशोधन मण्डल, वाराणसी।
6. तत्त्वार्थसूत्र, उमास्वाति, विवेचक, सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी 221005।
7. भगवान महावीर एवं जैन दर्शन, महावीर सरन जैन, लोक भारती प्रकाशन, दरबारी बिल्डिंग, एम०जी० मार्ग, इलाहाबाद, 2013।

कक्षा - एम.ए.

विषयः- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीयम् बौद्ध परम्परा के सिद्धान्त (ग) पत्रम् : चतुर्थम् (ग)

विषयः कूटाङ्कः	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः-	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोऽङ्कः
2008.4.3	चतुर्थम्		पाठ्यांशः	१००	९०	४
		१	बुद्ध की मौलिक शिक्षाएँ चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग, सत्ता के तीन लक्षण, ब्रह्म विहार, प्रतीत्यसमुत्पाद।	२०	२२	१
		२	निब्बान, क्षणभंगवाद, शील, समाधि और प्रज्ञा, पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त विषयक आरम्भिक बौद्ध अवधारणाएँ।	२०	२३	१
		३	बौद्ध-धर्म के सम्प्रदाय- सर्वास्तिवाद, वैभाषिक, सौत्रान्तिक।	२०	२२	१
		४	माध्यमिक (शून्यवाद), योगाचार (विज्ञानवाद), अर्हत और बोधिसत्व के आदर्श स्वरूप का परिचय, पूर्णता का सिद्धान्त, त्रिकाय सिद्धान्त।	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्काः ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्काः ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्काः ०५ ४.उपस्थितिः अङ्काः ०५ ७५%= ०१ अङ्कः ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्काः ८६%-९०%= ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम्= ०५ अङ्काः	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. बौद्ध धर्म एवं दर्शन, आचार्य नरेन्द्र देव, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 1954।
2. प्राकृत प्रकाश, वररूचि, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
3. Buddhist Thought in India, Conxe, E., Delhi:1996.
4. What the Buddha Tought, Rahul Wapola, Reprint, London:2007
5. Kalpahana, D.J., Buddhist Philosophy:A Historical Analysis, Hawaii:1976.
6. Kalupahana, D.J., The principles of Buddhist Philosophy, Delhi:1992.
7. Murti, T.R.V., Studies in India though, Delhi:1979
8. Murti, T.R.V., The central Philosophy of Buddhism, London:1975.
9. Chatterjee, A.K., The Yogacara idealism, Delhi:1975.
10. Stcherbatsky, Th. Central conception of Buddhism, London:1923.
11. Moolerjee, S., Buddhist Philosophy of Universal Flux, Calcutta:1935.
12. Singh, Indira Narain, Philosophy of University Flux in Theravada Buddhism, Vidyanidhi prakashan, Delhi, 2002.

कक्षा - एम.ए.

विषयः- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीयम् वेदांग (क) पत्रम् : पञ्चम् (क)

वि.कू	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः-	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोऽङ्कः
2008.5.1	पञ्चम्		पाठ्यांशः	१००	९०	४
		१	**शिक्षा** -श्रुत्युक्त शिक्षा का स्वरूप, शिक्षोक्त वर्णोच्चारण, वेद की विभिन्न शाखाओं के अनुसार विभिन्न 'शिक्षा' ग्रन्थ, शिक्षानुमत स्वरभक्ति का स्वरूप, शिक्षा एवं प्रातिशाख्य का अन्तःसम्बन्ध	२०	२२	१
		२	**व्याकरण** -"वेदांगो में व्याकरण नामक वेदांग" की मुख्यता, व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन, व्याकरण शास्त्र की प्राचीन एवं नव्य परम्परा, व्याकरण शास्त्र के अनुसार प्रकृति और प्रत्यय का विवेचन, व्याकरण शास्त्र के द्वारा सुबन्त, तिङन्त, कारक एवं समास पदों का व्युत्पादन	२०	२३	१
		३	**निरूक्त** - निरूक्त शास्त्र का स्वरूप एवं प्रयोजन, वेदार्थावबोध में निरुक्त शास्त्र का योगदान, निरुक्त के अनुसार शब्दनिर्वचन के प्रकार, निरुक्त के अनुसार मन्त्रों का त्रैविध्य, निरुक्तानुरूप देवतास्वरूप चिन्तन	२०	२२	१
		४	**छन्दः शास्त्र** -गायत्र्यादि वैदिकच्छन्दों का स्वरूप, अनुष्टुपादि लौकिकच्छन्दों का स्वरूप, वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों का विवेचन, दैवीगायत्र्यादि वैदिकच्छन्दों का विभाजन, लौकिकच्छन्दों में मगणादि गणों की उपादेयता **कल्प और ज्योतिष**- स्वरूप, प्रयोजन, कल्प एवं ज्योतिष के अवान्तन्त भेद, कल्प एवं ज्योतिष का सामाजिक प्रमाणिक उपादेयता	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्काः ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्काः ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्काः ०५ ४.उपस्थितिः अङ्काः ०५ ७५%= ०१ अङ्कः ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्काः ८६%-९०%= ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम्= ०५ अङ्काः	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. याज्ञवल्क्य शिक्षा, अमरनाथ शास्त्री, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली।
2. नारदीय शिक्षा, श्रीपीताम्बरापीठ, संस्कृत परिषद्, दतिया।
3. पाणिनीय शिक्षा, शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013।
4. पिङ्गलछन्दसूत्रम्, कपिलदेव द्विवेदी, श्यामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015.
5. ऋग्वेद प्रातिशाख्यम्, वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान्, दिल्ली।
6. अष्टाध्यायी, प्रथमा वृत्ति, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु रामलालकपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा।
7. निरुक्त, यास्क, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
8. व्यास शिक्षा।
9. शिक्षावल्ली, तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर।
10. छन्दोमंजरी, गंगादास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2015।

कक्षा - एम.ए.

विषय:- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीयम् पालि भाषा एवं साहित्य (ख) पत्रम् : पञ्चम् (ख)

विषय: कूटाङ्क:	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्क:	एककम्		पूर्णाङ्का:	अवधि:	श्रेयोऽङ्क:
2008.5.2	पञ्चम्		पाठ्यांश:	१००	९०	४
		१	**पालि व्याकरण** -संधि , कारक , समास , काल , धातुगण, शब्दरूप।	२०	२२	१
		२	थेरवाद बुद्ध सैदान्तिक पारिभाषिक शब्दों पर संक्षिप्त आलेख बोधिसत्व, बुद्ध, दु:खम्, दु:खसमुदाय, दु:निरोधम्, अनिच्छता, अनत्ता, मेत्ता, करूणा, उपेक्खा, अरहत्ता, निब्बान	२०	२३	१
		३	प्रतीत्यसमुत्पाद, पञ्चस्कन्ध, मज्झिमाप्रतिपदा, शील, समाधि, प्रज्ञा	२०	२२	१
		४	**पालि साहित्य का परिचय तथा इतिहास** त्रिपिटकों का समान्य अध्ययन , त्रिपिटकोत्तरवर्ती साहित्य, बुद्धवचनों का वर्गीकरण, वंश साहित्य, अनुवाद-पालि से अंग्रेजी /हिन्दी/संस्कृत	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्का: ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्का: ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्या: चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्का: ०५ ४.उपस्थिति: अङ्का: ०५ ७५%= ०१ अङ्क: ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्का: ८६%-९०%= ०४ अङ्का: ९१% त: अधिकम्= ०५ अङ्का:	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. Tiwary, L.n., & B. Sharma (ed), Kaccayana-vyakarana, Varanasi, 1961.
2. Geiger, W., Pali Literature and Language, Eng. Trans. C. Ghosh, reprint, Calcutta, 1968.
3. Jagdish, B.J., Pali Mahavyakarana, Saranatha, 1968.
4. Warder, A.K., Introduction to pali, London, 1974.
5. Warder, A.K., pali Metre, London, 1967.
6. Balavatara (Ed.) Swami Dwarikadasa Shastri, Bauddha Bharati, Varanasi, Samvat, 2028.

कक्षा - एम.ए.

विषयः- हिन्दू अध्ययन

सत्रम् : द्वितीयम् प्राकृत भाषा एवं साहित्य (ग) पत्रम् : पञ्चम् (ग)

वि. कू	प्रश्नपत्र-क्रमाङ्कः	एककम्	पाठ्यग्रन्थः	पूर्णाङ्काः	अवधिः	श्रेयोऽङ्कः
2008.5.3	पञ्चम्		पाठ्यांशः	१००	९०	४
		१	**प्राकृत भाषा** उत्पति, परिभाषा एवं विकास,प्रथमस्तरीय प्राकृत, मध्यस्तरीय प्राकृत, तृतीय स्तरीय प्राकृत एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में प्राकृत भाषा का योगदान , वैदिक साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्व	२०	२२	१
		२	**प्राकृत व्याकरण** कारक, संधि, समास, क्रिया. तद्धित, कृदन्त, रूपतत्व : शब्दरूप एवं धातुरूप	२०	२३	१
		३	**अर्धमागधी आगम साहित्य,** अंग साहित्य, द्वादश अंग उपांग साहित्य और द्वादश उपांग, छेदसूत्र, मूलसूत्र, प्रकीर्णक और चूलिका	२०	२२	१
		४	**शौरसेनी आगम साहित्य ,** शौरसेनी टीका साहित्य, आचार्य कुन्दकुन्द की रचनाएं	२०	२३	१
		५	आन्तरिकमूल्याङ्कनम् १.आन्तरिकपरीक्षणम् / प्रदत्तनियतकार्यम् अङ्काः ०५ २.शास्त्रसम्बद्धसंगोष्ठी / शास्त्रपरिचर्या अङ्काः ०५ ३.शिक्षणस्रोतस्सामग्र्याः चयनं प्रबन्धनञ्च अङ्काः ०५ ४.उपस्थितिः अङ्काः ०५ ७५%= ०१ अङ्कः ७६%-८०%= ०२ अङ्कौ ८१%-८५%= ०३ अङ्काः ८६%-९०%= ०४ अङ्काः ९१% तः अधिकम्= ०५ अङ्काः	२०	-	-

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद, 1951।
2. अभिनव प्राकृत व्याकरण, नेमिचन्द शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1963।
3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, नेमिचन्द शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1966।
4. प्रौढ़ प्राकृत अपभ्रंश रचना सौरभ भाग-2 कमल चन्द्र सौगानी, उपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, जयपुर(राजस्थान), 2003।
5. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, रिचर्ड पिशल, अनुवादक हेमचन्द जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958।
6. प्राकृत वाक्य रचना बोध, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान 1991।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, वेचर दास जोशी, प्रकाशन पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी. 1966।
8. प्राकृत साहित्य का इतिहास, जगदीश चन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।
9. कुन्दकुन्दभारती, कुन्दकुदाचार्य, श्रुत भण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फल्टन, महाराष्ट्र, 1970।
10. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, हीरालाल जैन, मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, 1962।
11. प्राकृत भाषा एवं साहित्य, वररूचि, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
12. प्राकृत प्रकाश, वररूचि, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।